Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 04, (सितम्बर, 2024)
पृष्ठ संख्याः 68–70

बैंगन की खेती करने की वैज्ञानिक विधि से अधिक, उपज, आमदनी और इसके लाभ

अवनीश कुमार[1], विनीत कुमार मीणा[1], आशीष कुमार नागर[1] एवं डॉ. रिंकेश सिटोले[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, सोरभ कृषि महाविद्यालय, खेड़ा हिंडौन सिटी, करौली, राजस्थान

[2]सहायक परियोजना प्रबंधक (कृषि), अर्पण सेवा संस्थान, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत।

Email Id: – keshrinath.tripathi@gmail.com

बैंगन एक सब्जी की फसल है जिसे बड़े चाव से भारत के सभी राज्यों में खाया जाता है। भारत में बैंगन, आलू के बाद सबसे ज्याद खपत वाली सब्जी है। चीन के बाद भारत इसका सबसे ज्यादा उत्पादन वाला देश है। यह देश में 5.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर उगाई जाने वाली फसल है। जिसमें लगभग 10.5 करोड़ टन पैदावार होती है। बैंगन के फल का रंग बैंगनी, हरा, पीले रंग और सफेद हो सकता है। इसका आकार गोल, अंडाकार लम्बा हो सकता है। इसके पौधे की लम्बाई 2 से 3 फुट तक हो सकती है। बैंगन एक पौष्टिक सब्जी होती है। इसमें कैल्सियम, फास्फोरस, लोहा इसके आलावा विटामिन ए और बी जैसे खनिज पदार्थ भी होते है। इसके साथ ही सफेद किस्म के बैंगन को मधुमय रोग में सर्वाधिक काम में लिया जाता है। यदि इसकी उपयुक्त किस्में बोई जाए और आधुनिक तकनीकी अपनाई जाए तो इसकी फसल से अच्छी पैदवार प्राप्त की जा सकती है। उन प्रमुख उपायों का विवरण यहाँ नीचे दिया गया है। जिसे किसान भाई बैंगन की अच्छी पैदावर प्राप्त कर सकते है

बैंगन हेतु जलवायु और भूमि

1. बैंगन को लम्बे गर्म और बरसाती मौसम की आवश्यकता होती है। अत्यधिक सर्दी से बैंगन की फसल प्रभावित होती है। और पैदावर कम होती है। तो बैंगन की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है।

2. बैंगन के लिए उपजाऊ और जल निकासी वाली सभी प्रकार की भूमि अच्छी पैदावार देती है। इसके साथ–साथ यदि मिटटी दोमट और हल्की दोमट हो तो यह इस फसल के लिए सबसे उपयुक्त होती है।

उन्नत किस्में और पौधशाला

बैंगन की उन्नत किस्में इस प्रकार है, जिनका पैदावार में सबसे महत्वपूर्ण योगदान होता है, जैसे–

1. पूसा हाइब्रिड 5– इसके पौधे की अच्छी बढवार और शखाएं उपर की और उठी होती है। फल मध्यम लम्बाई के और बैंगनी चमकदार होते है। पहली तुडवाई के लिए 85 से 95 दिन लगते है। यह फसल समुन्द्र तट को छोडकर सभी क्षत्रों के लिए उपयुक्त

है। इसकी पैदावार 500 से 650 क्विंटल प्रति हेक्टयर होती है।

2. पूसा हाइब्रिड 6– इसके पौधे मध्यम होते है। फल गोल चमकदार बैंगनी रंग के होते है। इसकी पहली तुडवाई 85 से 90 दिन में होती है। इसकी पैदावार 450 से 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

3. पूसा हाइब्रिड 9– इसके पौधे सीधे खड़े होते है। इसके फल अंडाकार गोल, आकर्षक बैंगनी चमकदार होते है। इसकी तुडवाई 85 से 90 दिन में होती है। इसकी पैदावार 450 से 500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

4. पूसा भैरव– इसके फल गहरे बैंगनी थोड़े मोटे और लम्बे होते है। यह किस्म फल गलन प्रतिरोधी है। इसकी पैदावार 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

5. पूसा क्रांति– इस के फल गहरे बैंगनी और मध्यम आकार के होते है। यह फसल बसंत और सर्दी मौषम दोनों के लिए उपयुक्त होती है। इसके पैदावर 300 क्विंटल तक होती है।

6. पूसा अनुपम– पौधे मध्यम होते है। इसके फल पतले लम्बे और बैंगनी होते है। फल गुच्छे में लगते है। यह किस्म उकठा रोग रोधी है।

7. पूसा पर्पल क्लस्टर– इसके फल 9 से 12 सेंटीमीटर होते है। यह फसल पहाड़ी क्षत्रों के लिए है। यह किस्म फल, तना छेदक, जीवाणु और उकठा रोग के लिए कुछ रोधी है।

8. पूसा उत्तम– इसके फल अंडाकार चमकदार गहरे बैंगनी और मध्यम आकार के होते है। फसल की पहली तुडवाई 85 से 90 दिन में होती है। इसकी पैदावार 425 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। यह किस्म मैदानी और पश्चिमी क्षत्रों के लिए उपयुक्त है। अन्य किस्मे इस प्रकार है जैसे– पूसा बिंदु, पूसा अंकुर, पूसा उपकार, आजाद क्रांति, पूसा पर्पल लोंग, आजाद बी– 1, कल्यानपुर टाइप– 3, पन्त ऋतुराज और संकर किस्में– आजाद हाइब्रिड, सुप्रिया, अर्का नवनीत और सुफल इत्यादि प्रमुख है।

बैंगन के लिए 5 से 7 सेंटीमीटर के फसलों से कतार बनाकर पौधशाला में बीज बोने चाहिए। एक हेक्टेयर के लिए लगभग 400 से 450 ग्राम बीज समान्य किस्म का उपयुक्त है। संकर किस्मों के लिए 250 से 275 ग्राम प्रति हेक्टेयर बीज उपयुक्त होता है।

बीज बुवाई और सिंचाई

1. बैंगन की पौध रोपण के समय लाइन से लाइन की दुरी 70 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दुरी 60 सेंटीमीटर भारी किस्मों के लिए रखना चाहिए। और छोटी आकार वाली किस्मों के लिए लाइन से लाइन की दुरी 60 और पौधे से पौधे की दुरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

शरद फसल के लिए समय–

मई से जून तक बीज बोएं जाते है, और पौध रोपाई जुलाई मध्य तक की जाती है।

बसंत और ग्रीष्म फसल के लिए–

नवम्बर के मध्य में बीज बोए जाते है, और जनवरी के अंत तक पौध रोपाई की जाती है।

वर्षा ऋतू फसल के लिए–

इस फसल के बीज फरबरी से मार्च तक बोए जाते है, और पौध की रोपाई मार्च से अप्रेल में की जाती है।

2. पौध रोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद यदि बरसात नही

होती है, तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए।

खाद उर्वरक और खरपतवार प्रबंधन

1. बैंगन की फसल के लिए खाद या उर्वरक की मात्रा मिटटी परिक्षण के बाद ही उपयुक्त होती है। यदि मिटटी की जाँच नही की है तो पहली जुताई मिटटी पलटने हल से करने के बाद 250 से 300 क्विंटल गोबर की खाद डालनी चाहिए। उसके बाद देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर के अच्छे से मिट्टी में मिला देना चाहिए। इसके बाद आखरी जुताई में 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम फास्फोरस और 80 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देनी चाहिए। इसमें फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन की आदि मात्र देनी चाहिए। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा दो हिस्सों में देनी चाहिए, एक तो रोपाई के 30 से 35 दिन बाद और दूसरी फल के समय देनी चाहिए।

2. बैंगन की फसल में 2 से 3 निराई गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए। खरपतवार के लिए आप खरपतवारनाशी का भी उपयोग कर सकते है, इसके लिए एलाक्लोर 50 ईसी 3.5 लिटर या वासालिन 48 ईसी 2 लिटर प्रति हेक्टेयर 800 से 1000 लिटर पानी में घोल बनाकर रोपाई से पहले छिड़काव करना चाहिए। इसे खरपतवार का जमाव ही नही होगा, यदि हुआ भी तो बहुत कम मात्रा में होगा।

रोग और कीट रोकथाम

1. बैंगन में रोग रोकथाम के लिए बीज को उपचारित कर के बोना अति आवश्यक होता है। यदि फिर भी रोग लग जाते है। तो रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर मिटटी मई दबा देना चाहिए। इसके साथ साथ 250 मिलीलीटर फस्फोमिडान को 700 से 900 लिटर पानी में मिलाकर 8 से 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए।

2. बैंगन की फसल में तना और फल बेधक किट प्रमुख होते है। इनकी रोकथाम के लिए कार्बोसल्फान 25 ईसी या मोनोक्रोटोफास 36 सी डब्लू 1.5 लिटर को 700 से 800 लिटर पानी में घोल बनाकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए।

फल तुड़वाई और पैदावार

1. फुल आने के बाद 5 से 7 दिन में फल तोडना शुरू कर देना चाहिए। ताकि किसान भाइयों को अच्छी पैदावर और भाव मिल सके।

2. फसल के अनुकूल मौषम और उपरोक्त उपायों के बाद किसान भाइयों को सामान्य किस्मों की पैदावार 250 से 350 क्विंटल और संकर किस्मों की पैदावार 500 से 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मिलनी चाहिए।